



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

# IJRSET

International Journal of Innovative Research in  
**SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY**

# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 12, December 2022

**ISSN** INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA

Impact Factor: 8.118

 9940 572 462

 6381 907 438

 [ijirset@gmail.com](mailto:ijirset@gmail.com)

 [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

# विकासशील देशों का प्रशासन और लैंगिक असमानता

Dr.Reena Srivastava

Professor in Public Administration, Govt. College, Sirohi, Rajasthan, India

## सार

विकासशील देशों में लैंगिक असमानता एक अधिक स्पष्ट घटना है, जिसकी जड़ें खराब प्रशासन और अपर्याप्त सामाजिक और धार्मिक संस्थाएँ हो सकती हैं। इसलिए, यह शोध 1995-2015 तक 59 विकासशील देशों के एक पैनल में लैंगिक समानता पर धार्मिक तनाव, शासन, आर्थिक विकास और शिक्षा के प्रभावों का परीक्षण करता है।

## परिचय

शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यक्तिगत स्वायत्तता और अन्य क्षेत्रों में पुरुषों के पक्ष में लैंगिक अंतर अमीर देशों की तुलना में गरीब देशों में व्यवस्थित रूप से बड़ा है। यह लेख गरीब देशों में लैंगिक असमानता के मूल कारणों की पड़ताल करता है। क्या लैंगिक असमानता के उच्च स्तर की व्याख्या अविकसितता से ही होती है? या क्या आज जो देश गरीब हैं उनमें कुछ ऐसी विशेषताएँ और सांस्कृतिक मान्यताएँ हैं जो बड़े लैंगिक अंतर को जन्म देती हैं?

मैं इस बारे में कुछ बुनियादी तथ्यों का दस्तावेजीकरण करके शुरुआत करता हूँ कि लैंगिक असमानता आर्थिक विकास के स्तर से कैसे संबंधित है। फिर मैं कई तंत्रों पर चर्चा करता हूँ जिनके माध्यम से आर्थिक विकास की प्रक्रिया सैद्धांतिक रूप से महिलाओं के सापेक्ष परिणामों में सुधार कर सकती है और इन तंत्रों पर हाल के साक्ष्यों की समीक्षा करती हूँ। [1,2,3]

मेरा तर्क है कि यद्यपि विकास और लैंगिक असमानता के बीच अधिकांश संबंधों को विकास की प्रक्रिया द्वारा समझाया जा सकता है, समाज-विशिष्ट कारक भी इसमें भूमिका निभाते हैं। कई देश जो आज गरीब हैं, उनमें सांस्कृतिक विशेषताएँ हैं जो पुरुषों के प्रति पक्षपात को बढ़ाती हैं। उदाहरण के लिए, चीन और भारत में माता-पिता की बेटा पैदा करने की प्रबल इच्छा को समझाने के लिए गरीब होना अपर्याप्त है।

इसके बाद मैं जन्म के समय पुरुष-विपरीत लिंगानुपात की समस्या पर अधिक विस्तार से चर्चा करता हूँ, जो लिंग पूर्वाग्रह की अधिकांश अन्य अभिव्यक्तियों से इस मायने में भिन्न है कि यह आर्थिक विकास के साथ तीव्र हो रही है, कम नहीं हो रही है। अंत में, मैं लैंगिक अंतर को कम करने में तेजी लाने के लिए कुछ नीतिगत दृष्टिकोण प्रस्तुत करता हूँ।

ध्यान दें कि लेख का ध्यान लैंगिक असमानता के प्रभावों के बजाय कारणों पर है, और इस प्रकार मैं कार्य-कारण की विपरीत दिशा पर साहित्य की समीक्षा नहीं करता, यानी कि कैसे लैंगिक असमानता आर्थिक विकास में बाधा डालती है।<sup>1</sup> फिर भी, अधिकांश चर्चा महिलाओं और लड़कियों के लिए सीमित अवसरों के परिणामस्वरूप होने वाली अक्षमताओं की ओर संकेत करती है।

## 2. गरीब देशों में अधिक लैंगिक असमानता: कुछ तथ्य

लैंगिक असमानता पर गरीब देशों का किसी भी तरह से एकाधिकार नहीं है। मूलतः सभी समाजों में पुरुष महिलाओं की तुलना में अधिक कमाते हैं। हालाँकि, प्रति व्यक्ति कम सकल घरेलू उत्पाद वाले देशों में स्वास्थ्य, शिक्षा और विवाह के भीतर सौदेबाजी की शक्ति में असमानताएँ अधिक होती हैं।

लैंगिक असमानता का एक पहलू जिस पर शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं का बहुत अधिक ध्यान जाता है, वह है घर के भीतर निर्णय लेने की शक्ति। घरेलू निर्णयों में एक महिला की हिस्सेदारी उसकी भलाई का एक घटक है और इस प्रकार यह अपने आप में एक लक्ष्य है, लेकिन महिला सशक्तिकरण में गहरी रुचि काफी हद तक इस विश्वास से उत्पन्न होती है कि यह बच्चों के परिणामों में सुधार करने का एक साधन है (डुफ्लो 2012)। सैद्धांतिक मॉडल जो इस विश्वास को रेखांकित करता है वह एक गैर-एकात्मक घराने का है, यानी, अलग-अलग प्राथमिकताओं वाले व्यक्तियों के एक समूह के रूप में एक घर, जो इस बात में भिन्न होता है कि वे

घर के निर्णयों को कितना प्रभावित करते हैं ( ब्राउनिंग और अन्य 1994 )। निर्णय लेने की शक्ति का एक माप दर्शाया गया है, डीएचएस में महिला उत्तरदाताओं द्वारा स्वयं-रिपोर्ट कि क्या बड़ी खरीदारी करने के बारे में घरेलू निर्णयों में उनकी हिस्सेदारी है। देश जितना गरीब होगा, महिलाओं के इन खर्च निर्णयों को प्रभावित करने की संभावना उतनी ही कम होगी। अन्य क्षेत्रों में निर्णय लेने के लिए भी इसी तरह का पैटर्न देखा जाता है, जैसे कि परिवार और दोस्तों से मिलने जाना है या नहीं।

विभिन्न देशों में देखा जाने वाला आय अनुपात देशों के भीतर भी समान है। डीएचएस देश-विशिष्ट घरेलू संपत्ति सूचकांक की गणना करता है। अपने देश में औसत संपत्ति स्तर से ऊपर की महिलाओं में निर्णय लेने की शक्ति अधिक होती है और लिंग आधारित हिंसा के प्रति उनकी सहनशीलता औसत से नीचे की संपत्ति वाली महिलाओं की तुलना में कम होती है

कॉलेज में नामांकन से लेकर किसी के जीवन पर नियंत्रण तक विभिन्न उपायों पर विकसित देशों की महिलाओं की तुलना में विकासशील देशों में महिलाएं पुरुषों की तुलना में बदतर स्थिति में हैं। इस खंड में, मैं उन तंत्रों पर चर्चा करता हूँ जिनके माध्यम से आर्थिक विकास स्वयं लैंगिक समानता और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के बीच सकारात्मक सहसंबंध की व्याख्या करता है, अर्थात्, यह सहसंबंध लैंगिक समानता के कारण आर्थिक विकास को प्रतिबिंबित कर सकता है। स्पष्टीकरण के रूप में आर्थिक विकास की जांच करते समय, मैं निम्नलिखित विशेषताओं को आर्थिक विकास की कुछ परिभाषित विशेषताओं के रूप में देखता हूँ: उच्च घरेलू आय, बेहतर भौतिक बुनियादी ढांचा, अधिक उन्नत तकनीक, सेवाओं से अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा, और कम प्रजनन क्षमता। धारा 4 में, मैं उन स्पष्टीकरणों पर विचार करता हूँ जो आज के गरीब देशों में सांस्कृतिक अंतर को आकर्षित करते हैं, हालांकि इन कारकों का प्रभाव कई मामलों में गरीबी से जुड़ा हुआ है। निःसंदेह, सभी तंत्र और साक्ष्य इस विकास-बनाम-संस्कृति वर्गीकरण में सटीक रूप से फिट नहीं बैठते हैं। हालांकि, अपनी खामियों के बावजूद, चर्चा के आयोजन का यह तरीका इस बात पर प्रकाश डालने में मदद करता है कि क्या विकास की प्रक्रिया लैंगिक असमानता को खत्म कर देगी। श्रम उत्पादकता में लिंग अंतर के प्रभावों पर कुछ सर्वोत्तम साक्ष्य कृषि के भीतर भिन्नता से मिलते हैं। कियान (2008) ने 1970 के दशक के अंत में चीन में हुए आर्थिक सुधारों का अध्ययन किया, जिससे नकदी फसलें उगाना अधिक आकर्षक हो गया। उनका मानना है कि महिलाओं को चाय की पत्तियां चुनने में तुलनात्मक लाभ मिलता है, जो नाजुक होती हैं और छोटी झाड़ियों पर उगती हैं, जबकि पुरुषों की ऊंचाई और ताकत उन्हें पेड़ों से फल तोड़ने में लाभ देती है। इस प्रकार, वह चाय उगाने वाले क्षेत्रों में आर्थिक सुधारों के प्रभाव की तुलना करती है, जहां महिला श्रम उत्पादकता विशेष रूप से बढ़नी चाहिए थी, फलों के बागानों में विशेषज्ञता वाले क्षेत्रों से, जहां पुरुष श्रम उत्पादकता सबसे अधिक बढ़नी चाहिए थी। चाय उगाने वाले क्षेत्रों में, सुधारों के कारण "लापता लड़कियों" में कमी आई है, जो परिवारों में कन्या भ्रूणों के लिंग-चयनात्मक गर्भपात को कम करने या लड़कियों की कम उपेक्षा और शिशुहत्या में संलग्न होने के अनुरूप है। उन्होंने जो तंत्र सामने रखा वह यह है कि घरेलू आय में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ गई, उन्हें अपने परिवारों में सौदेबाजी की शक्ति प्राप्त हुई, पुरुषों की तुलना में उनके पास बेटे की प्राथमिकता कमजोर थी, और घरेलू निर्णय लेने में उनकी लिंग प्राथमिकता प्रबल हुई। [4,5,6]

#### विचार-विमर्श

लोक प्रशासन में लैंगिक समानता पर वैश्विक रिपोर्ट (जीईपीए) रिपोर्ट यूएनडीपी और पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय के अभूतपूर्व जीईपीए डेटाबेस के साक्ष्य के आधार पर सार्वजनिक प्रशासन में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व पर प्रमुख रुझानों और विश्लेषण का अवलोकन प्रदान करती है। इस मुद्दे पर 170 देशों को कवर करने वाले पहले व्यापक गहन शोध से पता चलता है कि यद्यपि सार्वजनिक प्रशासन में महिलाओं के प्रतिनिधित्व पर समग्र रूप से प्रगति हुई है, लेकिन लगातार अंतराल बना हुआ है। महिलाएं कांच की छत और कांच की दीवारों से टकराती रहती हैं जो उन्हें शक्ति और प्रभाव के उच्चतम स्तर पर पदों पर आगे बढ़ने से रोकती हैं, जिसमें सीओवीआईडी -19 प्रतिक्रिया भी शामिल है। रिपोर्ट इन कांच की छतों और कांच की दीवारों को तोड़ने और अधिक लैंगिक समावेशी और विविध सार्वजनिक प्रशासन की पुनर्कल्पना और पुनः डिज़ाइन करने में मदद करने के लिए व्यावहारिक सिफारिशें प्रदान करती है।

लैंगिक समानता न केवल एक मौलिक मानव अधिकार है, बल्कि एक शांतिपूर्ण, समृद्ध और टिकाऊ दुनिया के लिए एक आवश्यक आधार है। पिछले दशकों में प्रगति हुई है, लेकिन दुनिया 2030 तक लैंगिक समानता हासिल करने की राह पर नहीं है।

महिलाएं और लड़कियाँ दुनिया की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं और इसलिए इसकी क्षमता का भी आधा हिस्सा हैं। लेकिन लैंगिक असमानता हर जगह बनी हुई है और सामाजिक प्रगति को अवरुद्ध कर रही है। औसतन, श्रम बाजार में महिलाएं अभी भी विश्व स्तर पर पुरुषों की तुलना में 23 प्रतिशत कम कमाती हैं और महिलाएं पुरुषों की तुलना में अवैतनिक घरेलू और देखभाल कार्यों में लगभग तीन गुना अधिक घंटे बिताती हैं। [7,8,9]

यौन हिंसा और शोषण, अवैतनिक देखभाल और घरेलू काम का असमान विभाजन, और सार्वजनिक कार्यालय में भेदभाव, ये सभी बड़ी बाधाएँ बने हुए हैं। असमानता के ये सभी क्षेत्र कोविड-19 महामारी के कारण और बढ़ गए हैं: यौन हिंसा की रिपोर्टों में वृद्धि



हुई है, स्कूल बंद होने के कारण महिलाओं को अधिक देखभाल का काम करना पड़ा है, और विश्व स्तर पर 70% स्वास्थ्य और सामाजिक कार्यकर्ता महिलाएं हैं।

वर्तमान दर पर, बाल विवाह को समाप्त करने में अनुमानित 300 वर्ष लगेंगे, कानूनी सुरक्षा में अंतराल को कम करने और भेदभावपूर्ण कानूनों को हटाने में 286 वर्ष लगेंगे, कार्यस्थल में सत्ता और नेतृत्व के पदों पर महिलाओं को समान रूप से प्रतिनिधित्व करने में 140 वर्ष लगेंगे, और 47 वर्ष लगेंगे। राष्ट्रीय संसदों में समान प्रतिनिधित्व प्राप्त करने के लिए वर्षों।

लक्ष्य 5 को प्राप्त करने में प्रणालीगत बाधाओं को दूर करने के लिए राजनीतिक नेतृत्व, निवेश और व्यापक नीति सुधारों की आवश्यकता है। लैंगिक समानता एक सर्वव्यापी उद्देश्य है और यह राष्ट्रीय नीतियों, बजट और संस्थानों का मुख्य फोकस होना चाहिए।

हमने कितनी प्रगति की है?

लैंगिक समानता को आगे बढ़ाने की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं से कुछ क्षेत्रों में सुधार हुआ है: हाल के वर्षों में बाल विवाह और महिला जननांग विकृति (एफजीएम) में गिरावट आई है, और राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिनिधित्व पहले से कहीं अधिक है। लेकिन एक ऐसी दुनिया का वादा जिसमें हर महिला और लड़की को पूर्ण लैंगिक समानता प्राप्त हो, और जहां उनके सशक्तिकरण के लिए सभी कानूनी, सामाजिक और आर्थिक बाधाएं दूर कर दी गई हों, अधूरा है। वास्तव में, वह लक्ष्य शायद पहले से भी अधिक दूर है, क्योंकि महिलाएं और लड़कियां COVID-19 महामारी से बुरी तरह प्रभावित हो रही हैं।

क्या ये कोई अन्य लिंग-संबंधी चुनौतियाँ हैं?

हाँ। दुनिया भर में, लगभग आधी विवाहित महिलाओं के पास अपने यौन और प्रजनन स्वास्थ्य और अधिकारों पर निर्णय लेने की शक्ति का अभाव है। 15-49 वर्ष की आयु के बीच की 35 प्रतिशत महिलाओं ने शारीरिक और/या यौन अंतरंग साथी हिंसा या गैर-साथी यौन हिंसा का अनुभव किया है। 15-19 आयु वर्ग की 3 में से 1 लड़कियों ने 30 में किसी न किसी रूप में महिला जननांग विकृति/काटने का अनुभव किया है। अफ्रीका और मध्य पूर्व के देश, जहां हानिकारक प्रथा सबसे आम है, जिसमें लंबे समय तक रक्तस्राव, संक्रमण (एचआईवी सहित), प्रसव संबंधी जटिलताएं, बांझपन और मृत्यु का खतरा अधिक होता है।

इस प्रकार की हिंसा केवल व्यक्तिगत महिलाओं और लड़कियों को ही नुकसान नहीं पहुँचाती है; यह उनके जीवन की समग्र गुणवत्ता को भी कमज़ोर करता है और समाज में उनकी सक्रिय भागीदारी में बाधा डालता है।

मेरे लिए लैंगिक समानता क्यों मायने रखनी चाहिए?

चाहे आप कहीं भी रहें, लैंगिक समानता एक मौलिक मानव अधिकार है। गरीबी कम करने से लेकर लड़कियों और लड़कों के स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा और कल्याण को बढ़ावा देने तक, स्वस्थ समाज के सभी क्षेत्रों के लिए लैंगिक समानता को आगे बढ़ाना महत्वपूर्ण है।

हम क्या कर सकते हैं?

यदि आप एक लड़की हैं, तो आप स्कूल में रह सकती हैं, अपनी महिला सहपाठियों को ऐसा करने के लिए सशक्त बनाने में मदद कर सकती हैं और यौन और प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच के अपने अधिकार के लिए लड़ सकती हैं। यदि आप एक महिला हैं, तो आप अचेतन पूर्वाग्रहों और अंतर्निहित संबंधों को संबोधित कर सकती हैं जो समान अवसर के लिए एक अनपेक्षित और अक्सर अदृश्य बाधा उत्पन्न करते हैं।

यदि आप पुरुष या लड़का हैं, तो आप लैंगिक समानता हासिल करने और स्वस्थ, सम्मानजनक रिश्तों को अपनाने के लिए महिलाओं और लड़कियों के साथ काम कर सकते हैं।

आप महिला जननांग विकृति जैसी सांस्कृतिक प्रथाओं पर अंकुश लगाने और महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों को सीमित करने वाले और उन्हें उनकी पूरी क्षमता हासिल करने से रोकने वाले हानिकारक कानूनों को बदलने के लिए शिक्षा अभियानों को वित्तपोषित कर सकते हैं।

स्पॉटलाइट पहल एक यूरोपीय संघ/संयुक्त राष्ट्र साझेदारी है, और एक वैश्विक, बहु-वर्षीय पहल है जो महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ सभी प्रकार की हिंसा को खत्म करने पर केंद्रित है - महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ सभी प्रकार की हिंसा को खत्म करने के लिए दुनिया का सबसे बड़ा लक्षित प्रयास।[10,11,12]

#### परिणाम

- सीखना। काम। फलना-फूलना।

यह पेपर युवा महिलाओं को स्कूल से स्थिर रोजगार में बदलने में मदद करने के लिए विश्व बैंक की इस किशोर लड़कियों की पहल पर केंद्रित है। विकासशील देशों में लगभग 34% युवा महिलाएँ श्रम शक्ति और स्कूल से बाहर हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण समय है जब महिलाओं पर अक्सर विकासशील देशों में विवाह और बच्चे पैदा करने सहित प्रतिबंध बढ़ जाते हैं। विश्व बैंक परियोजना अफगानिस्तान, हैती, जॉर्डन, लाओ पीडीआर, लाइबेरिया, नेपाल, रवांडा और दक्षिण सूडान सहित 8 देशों में कार्यान्वित की जा रही है, जो 17,000 लड़कियों तक पहुंच रही है। अधिक महिलाओं को श्रम बल में लाकर महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लक्ष्य के साथ, इस परियोजना को प्रत्येक देश के लिए अनुकूलित किया जा रहा है। पेपर में उन कारणों पर प्रकाश डाला गया है कि क्यों श्रम बल में युवा महिलाओं की भागीदारी कम है और किशोर लड़कियों को अंततः स्थिर नौकरियां खोजने में मदद करने के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू करके विश्व बैंक ने विभिन्न देशों में क्या परिणाम देखे हैं।

- देहाती समाजों में महिला सशक्तिकरण

देहाती समाजों में महिलाओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन गैर सरकारी संगठन अक्सर महिलाओं को सशक्त बनाने की कोशिश करते हैं, बजाय इसके कि वे ऐसे तरीके खोजें जिससे महिलाएं खुद को सशक्त बना सकें। लेखक का सुझाव है कि लैंगिक समानता को उस गति से लिया जाना चाहिए जिसमें महिलाएं सहज हों और इसमें पूरी तरह से शामिल हों।[13,14,15] पेपर महिलाओं और पुरुषों के बीच शक्ति के विचार का विश्लेषण करता है और सुझाव देता है कि सशक्तिकरण केवल तभी सफल हो सकता है जब महिला और पुरुष दोनों समझें कि महिलाओं को ऐसा क्यों करना चाहिए। अधिक शक्ति है। देहाती समुदायों में सामाजिक संबंधों के बारे में सौ से अधिक रिपोर्टों की समीक्षा करते हुए, देहाती समुदायों में महिला सशक्तिकरण का आकलन करने के लिए केस स्टडीज का चयन किया गया। इन समुदायों में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए भविष्य की सिफारिशों के संदर्भ में, पेपर मोटे दिशानिर्देश प्रदान करता है लेकिन निष्कर्ष निकालता है कि कार्रवाई विशेष समुदाय पर निर्भर करती है क्योंकि ज़रूरतें और स्थितियां अलग-अलग होती हैं।

- अंतर समाप्त करें: महिलाओं के काम में असमानता की कीमत

एक्शनएड की रिपोर्ट पुरुषों के काम की तुलना में महिलाओं के अवैतनिक काम के परिमाण और लागत का विश्लेषण करती है। महिलाओं के काम में घर का रखरखाव करते हुए बच्चों, बुजुर्गों और बीमारों की देखभाल करना शामिल है, और यह काम किसी का ध्यान नहीं जाता है, हालांकि यह समाज की भलाई में एक मूल्यवान कार्य प्रदान करता है। रिपोर्ट के निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि विकासशील देशों में महिलाओं की स्थिति 9 ट्रिलियन डॉलर बेहतर हो सकती है यदि उन्हें भुगतान किए गए काम और समान वेतन तक समान पहुंच मिले। इसके अलावा, यदि महिलाओं को समान रोजगार के अवसर मिले तो 1.6 ट्रिलियन डॉलर का उत्पादन उत्पन्न किया जा सकता है। द्वितीयक डेटा और प्राथमिक अनुसंधान का उपयोग करते हुए, पेपर महिलाओं के काम की प्रकृति, शिक्षा से असमान लाभ और लैंगिक असमानता को कम करने के लिए आवाज, शक्ति, मानवाधिकार और विकल्प पर ध्यान केंद्रित करता है। रिपोर्ट में सरकारों और व्यवसायों से महिलाओं को आर्थिक अवसर के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ बनाने का आह्वान किया गया है।

- छिपी हुई मानव पूंजी: भारत में मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण और किशोर लड़कियों की आकांक्षाएं

पिछले अध्ययनों में स्वास्थ्य या शैक्षिक उपलब्धि सहित देखी गई संपत्तियों के संबंध में मानव पूंजी पर शोध किया गया क्योंकि वे आर्थिक परिणामों से संबंधित हैं। हालाँकि, यह अध्ययन भारत में किशोरों की शिक्षा और श्रम बाजार की आकांक्षाओं को समझने में सामाजिक-भावनात्मक पूंजी की भूमिका का दस्तावेजीकरण करने पर केंद्रित है। पिछले अध्ययनों से पता चला है कि उच्च रोजगार की आकांक्षा वाले युवाओं के वयस्क होने पर पेशेवर करियर में प्रवेश करने की अधिक संभावना होती है। यद्यपि विकसित देशों में सामाजिक-भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक पूंजी और आर्थिक परिणामों के संबंध का अध्ययन किया गया है, यह विचार विकासशील देशों के लिए नया है। यह अध्ययन झारखंड राज्य में 3 कम आय वाले भारतीय समुदायों में 3,942 किशोर लड़कियों के विश्व बैंक सर्वेक्षण का उपयोग करते हुए आत्म-प्रभावकारिता पर केंद्रित है। प्रमुख निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि झारखंड में किशोर लड़कियों और युवा महिलाओं (उम्र 15-24) के बीच शिक्षा और रोजगार दोनों के लिए आत्म-प्रभावकारिता आकांक्षा के प्रमुख निर्धारकों में से एक है। इसके अलावा, व्यक्तिगत और घरेलू स्तर के कारक जैसे उम्र, पिछला प्रशिक्षण अनुभव, और एक "सक्षम" वातावरण या ऐसा वातावरण जहां लड़कियां पारिवारिक/सामाजिक समर्थन का आनंद लेती हैं, जुड़ाव महसूस करती हैं और सशक्त माता-पिता और अन्य सफल रोल मॉडल का आदर करती हैं। आत्म-प्रभावकारिता बढ़ाने में महत्वपूर्ण। इसलिए, निष्कर्षों से पता चलता है कि विकासशील देशों में अधिक कार्यक्रमों में इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि भविष्य के लिए आकांक्षाओं को बढ़ाने के लिए युवा लड़कियों की आत्म-प्रभावकारिता को कैसे बढ़ावा दिया जाए।

- कॉर्पोरेट निदेशक मंडल में महिलाएँ: कनाडाई मुख्य कार्यकारी अधिकारियों के विचार

यह पेपर कनाडा में कॉर्पोरेट बोर्डों में महिलाओं के इतिहास, बोर्डों में महिलाओं की नियुक्ति के लाभों के साथ-साथ नियुक्ति की चुनौतियों की जांच करता है। अधिक महिलाएँ उच्च डिग्री अर्जित कर रही हैं और उच्च प्रबंधन पद हासिल कर रही हैं, हालाँकि, कॉर्पोरेट बोर्ड की सदस्यता रखने वाली महिलाओं का प्रतिशत 5% पर बना हुआ है। कनाडाई निगमों के 66 पुरुष सीईओ, जिनके बोर्ड में कम से कम एक महिला थी, से सर्वेक्षण डेटा एकत्र किया गया और बोर्ड पर महिलाओं के प्रभाव, पसंदीदा उम्मीदवार प्रोफाइल, व्यावसायिक महिलाओं के वर्तमान पूल, और उनकी मान्यताओं के बारे में जानकारी से संबंधित विश्लेषण किया गया कि वे क्यों हैं। अधिक महिला निर्देशक। निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि बोर्ड में महिलाओं के शामिल होने से फर्क पड़ता है और शेरधारकों और अन्य महिला कर्मचारियों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। अंत में यह पेपर बोर्ड में महिलाओं के होने के फायदों, उन्हें नियुक्त न किए जाने के कारणों और भविष्य में होने वाले सुधारों की जांच करता है।

- दक्षिण अफ्रीकी महिलाओं के लिए समान अवसर और सकारात्मक कार्रवाई: लाभ या बाधा?

दक्षिण अफ्रीकी सरकार द्वारा शीर्ष प्रबंधन पदों पर महिलाओं को नियुक्त करने के लिए कानून के माध्यम से सकारात्मक कार्रवाई लागू करने के बाद, इस कानून के लाभों और बाधाओं के बारे में बहस छिड़ गई है। यह पेपर इस कानून के प्रभावों का विश्लेषण करने के लिए माध्यमिक अनुसंधान और तुलनात्मक विश्लेषण का उपयोग करता है। निष्कर्षों से पता चलता है कि दक्षिण अफ्रीका में महिलाओं को शीर्ष स्तर के पदों पर देखना अभी भी असामान्य है और संगठनों में सामाजिक बाधाओं के कारण महिलाओं को समान समझना मुश्किल हो जाता है। पेपर उन तरीकों की सिफारिश करता है जिनसे दक्षिण अफ्रीका के संगठन अधिक लिंग-जागरूक बन सकते हैं, ऐसी नीतियां लागू कर सकते हैं जो कार्यस्थल को अधिक महिला-अनुकूल बनाती हैं।

- व्यवसाय में महिलाएँ: उद्यमिता, नैतिकता और दक्षता

महिलाओं की कामकाजी स्थितियों में सुधार लाने और उन्हें काम और पारिवारिक जीवन में सामंजस्य बिठाने में सक्षम बनाने की सामाजिक और व्यक्तिगत आवश्यकता है। यह पेपर महिलाओं को लाभ पहुंचाने और काम और पारिवारिक जीवन में सामंजस्य बिठाने की आर्थिक और नैतिक आवश्यकता पर प्रकाश डालता है और कुछ लोगों के विचारों की भी जांच करता है जो महिलाओं के लिए उद्यमिता के नकारात्मक प्रभावों पर विचार करते हैं। इसका निष्कर्ष यह है कि महिलाओं और उद्यमिता के विकास के बारे में तो समय ही बताएगा, लेकिन अगर सत्ता तक पहुंचने वाली महिलाएं पुरुषों से अलग व्यवहार मॉडल अपनाती हैं, तो वे सामाजिक परिवर्तन का एक तत्व बन सकती हैं।[16,17,18]

- क्रेडिट कार्यक्रम, गरीबी उन्मूलन और महिला सशक्तिकरण: श्रीलंका से एक केस स्टडी

गैर-सरकारी संगठनों द्वारा महिलाओं को सशक्त बनाने और गरीबी कम करने के तरीके के रूप में माइक्रो-क्रेडिट का उपयोग किया जा रहा है। माइक्रो-क्रेडिट कार्यक्रम संसाधनों तक पहुंच प्रदान करता है, जिससे घरेलू निर्णय लेने में भागीदारी बढ़ती है। हालांकि, इस बात पर बहस चल रही है कि महिलाओं को सशक्त बनाने और गरीबी दूर करने में यह उपकरण कितना प्रभावी है। यह अध्ययन श्रीलंका के कैंडी जिले में सूक्ष्म ऋण की भूमिका के बारे में जानकारी प्रदान करके इस बहस पर केंद्रित है। अध्ययन में सैद्धांतिक दृष्टिकोण के साथ-साथ फोकस समूहों, 60 महिलाओं के साथ साक्षात्कार और प्रतिभागी टिप्पणियों का उपयोग किया गया, मात्रात्मक और गुणात्मक जानकारी को मिलाकर यह निष्कर्ष निकाला गया कि श्रीलंका के इस क्षेत्र में गरीबी को कम करने के लिए ऋण तक पहुंच पर्याप्त नहीं थी, लेकिन कई महिलाओं ने महसूस किया जैसे-जैसे उनके संसाधन और आत्मविश्वास बढ़े, वे सशक्त हुए।

- ग्रामीण नेपाल में बचत और ऋण सहकारी समितियों में महिला सशक्तिकरण: लिंग और संगठनात्मक परिवर्तन का एक अध्ययन

यह पेपर नेपाल में मिश्रित (पुरुष और महिला) बचत और ऋण सहकारी समितियों के कारण महिला सशक्तिकरण के परिणाम की जांच करता है। फोकस समूह चर्चाओं और साक्षात्कारों सहित योजना सिद्धांत, भागीदारी और नारीवादी अनुसंधान का उपयोग करते हुए, नेपाल के एक अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला है कि मिश्रित सहकारी समितियों में महिलाओं के पास पुरुषों की तुलना में कम शक्ति है। घरों में मौजूद लैंगिक शक्ति संबंध मिश्रित वित्त सहकारी समितियों में भी जारी रहते हैं क्योंकि महिलाओं को अधिकांश सेवाओं तक असमान पहुंच और सहकारी नेता बनने का अवसर मिलता है। पुरुष सदस्य और नेता महिला सशक्तिकरण का समर्थन करेंगे यदि यह कर लाभ प्रदान करता है, विकास में सुधार करता है, और सहकारी समिति में महिलाओं का नियंत्रण नहीं बढ़ाता है।

- फ़िलिस्तीन में महिलाओं और युवाओं के लिए व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण: व्यवसाय के तहत गरीबी में कमी और लैंगिक समानता

हाशिए पर रहने वाले समूहों को अधिक आर्थिक अवसर प्रदान करने के लिए गैर-सरकारी संगठनों द्वारा व्यावसायिक प्रशिक्षण का उपयोग किया गया है। यह पेपर फ़िलिस्तीन में महिलाओं और युवाओं के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण के उपयोग की जांच करने के लिए आंतरिक साक्षात्कार डेटा सहित माध्यमिक अनुसंधान का उपयोग करता है, जिसमें इसकी सीमाएं और संभावनाएं भी शामिल हैं। विशेष रूप से, यह व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (वीईटी) के दो सफल मॉडलों पर ध्यान केंद्रित करता है, जो मानव विकास दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें अधिकार आधारित दृष्टिकोण और क्षमता दृष्टिकोण शामिल है। यह श्रम बल भागीदारी दर बढ़ाने और युवाओं और महिलाओं के लिए आय सृजन में मानव विकास दृष्टिकोण के साथ वीईटी के प्रभावों का वर्णन करता है। कुल मिलाकर, यह वीईटी को चुनौतियों का जवाब देने और व्यक्तियों के लिए विकल्प बनाने के तरीके के रूप में दर्शाता है, हालांकि लिंग लेंस को शामिल करने के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

- क्या शिक्षा श्रम बाज़ार में लैंगिक समानता का मार्ग बन सकती है? पाकिस्तान पर एक अपडेट

सरकारी एजेंसियां और गैर-सरकारी संगठन आर्थिक विकास और लैंगिक अंतर को खत्म करने के साधन के रूप में शिक्षा में निवेश कर रहे हैं। यह अध्ययन रैखिक प्रतिगमन विश्लेषण का उपयोग करके, लिंग के आधार पर विभिन्न व्यवसायों में स्कूल की मात्रा और गुणवत्ता पर रिटर्न का अनुमान लगाने के लिए पाकिस्तान में 1000 से अधिक घरों के सर्वेक्षण के डेटा के साथ-साथ सभी प्रकार के श्रमिकों के लिए अनुमानित आय कार्यों का उपयोग करता है। विश्लेषण से पता चलता है कि आठ साल की स्कूली शिक्षा के बाद महिलाओं के श्रम बल का हिस्सा बनने की संभावना बढ़ जाती है। इसके अलावा, शिक्षा और कौशल के लिए बाजार में पुरस्कार पुरुषों की तुलना में महिलाओं के लिए अधिक हैं, जिससे उच्च आर्थिक परिणाम प्राप्त होते हैं। हालांकि, उसी व्यवसाय में, महिलाएँ अभी भी पुरुषों की तुलना में काफी कम कमाती हैं। इसलिए, लगातार लिंग अंतर है जिसे संबोधित किया जाना चाहिए ताकि महिलाएँ अपनी शिक्षा से पुरस्कार प्राप्त कर सकें।

- सोलोमन द्वीप और फिजी में लैंगिक समानता और आर्थिक सशक्तिकरण: एक स्थान-आधारित दृष्टिकोण

लैंगिक समानता और आर्थिक सशक्तिकरण को मापने और समझने के प्रयास में, अनुसंधान परियोजनाओं पर काम करने वाले संगठनों के साथ साझेदारी के माध्यम से फिजी और सोलोमन द्वीप में एक विश्लेषण किया जाता है। प्रशांत देशों में श्रम की विशेषता लैंगिक विभाजन और अवैतनिक कार्य है। विश्लेषण में लैंगिक समानता और श्रम के बारे में विचार तैयार करने के लिए परिवारों का साक्षात्कार करने वाली कार्यशालाएं शामिल थीं, जिसमें यह भी शामिल था कि लैंगिक समानता के संकेतक पुरुषों और महिलाओं के अनुभवों को कितनी अच्छी तरह प्रतिबिंबित करते हैं। विश्लेषण में गैर-बाजार लेनदेन, गैर-नकद विनिमय के रूप शामिल हैं, और महिलाओं और पुरुषों के घरेलू काम में असंतुलन को पहचाना गया है। निष्कर्ष संगठनों और सरकार को घर में महिलाओं के काम को मान्यता देने की आवश्यकता की ओर इशारा करते हैं, न कि उन्हें केवल रोजगार और भुगतान वाले काम तक पहुंच प्रदान करते हैं, बल्कि समुदाय और घर में उनके मूल्य को संबोधित करने की आवश्यकता को भी समझते हैं, जिससे महिलाओं के काम करने के तरीके में सुधार होता है। पुरुष एक साथ काम करते हैं।

- माइक्रोफाइनेंस और लिंग: मुद्दे, चुनौतियाँ और आगे की राह

इस पेपर में महिला सशक्तीकरण के लिए माइक्रोफाइनेंस के उद्भव, इस लक्ष्य के लिए इसके द्वारा उठाए गए मुद्दों और उपकरण के परिणामों को मापने की एक साहित्य समीक्षा और चर्चा शामिल है। विशेष रूप से, पेपर इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि लिंग वित्तपोषण में कैसे भूमिका निभाता है और घर के भीतर और बाहर शक्ति संबंध महिलाओं को सशक्त बनाने के एक उपकरण के रूप में माइक्रोफाइनेंस के परिणामों को कैसे प्रभावित करते हैं। पेपर में शोधकर्ताओं से माइक्रोफाइनेंस में लैंगिक गतिशीलता पर साक्ष्य इकट्ठा करने का आह्वान किया गया है ताकि ऐसी प्रणालियाँ और प्रक्रियाएँ बनाई जा सकें जो लैंगिक समानता को आगे बढ़ाने में इस गतिशीलता पर विचार करें।

- क्या लैंगिक समानता आर्थिक असमानता बढ़ाती है? पाँच देशों से साक्ष्य

साक्ष्यों से पता चला है कि महिलाओं के रोजगार, शिक्षा और कमाई बढ़ने से आर्थिक असमानता में कमी आती है। यह पेपर डेनमार्क, जर्मनी, इटली, यूके और अमेरिका में आय असमानता पर लैंगिक समानता के प्रभाव को निर्धारित करने में पारिवारिक गतिशीलता का पता लगाता है। विशेष रूप से, संसाधनों को एकत्र करने और पुनर्वितरित करने में परिवार की भूमिका के कारण, विभिन्न घरों में समानता बढ़ने से अनुकूल या प्रतिकूल परिणाम हो सकते हैं। 1980 के दशक के मध्य से 2000 के मध्य तक पाँच देशों के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर, निष्कर्षों से पता चलता है कि भागीदारों के बीच बढ़ी हुई समानता प्रासंगिक हद तक असमानता को नहीं बढ़ाती है और रोजगार में महिलाओं की आमद ने इसे बढ़ाने के बजाय घरों के बीच असमानता को कम करने में योगदान दिया है। सभी पाँच देशों में, असमानता में वृद्धि उच्च और निम्न आय वाले परिवारों के बीच बढ़े हुए ध्रुवीकरण और परिवार के प्रकारों के भीतर आय के फैलाव से प्रेरित है, जिससे पता चलता है कि लिंग के अलावा सामाजिक बाधाएँ भी इसमें शामिल हैं।

- व्यापार में लैंगिक समानता

यह चर्चा दुनिया भर में महिलाओं के लिए बढ़ते व्यापार के प्रभाव को छूती है। व्यापार बड़े पैमाने पर लाभ ला रहा है, लेकिन गरीबी और आय असमानता को कम करने के लिए लाभ को वितरित करने के तरीके ढूँढना एक चुनौती है। महिलाओं सहित कुछ सामाजिक समूहों को बढ़ते व्यापार से समान रूप से लाभ नहीं होता है, जिससे गरीबी पर और असर पड़ता है। महिलाओं को अक्सर अच्छी कमाई के साथ रोजगार के अवसरों तक पहुंच की कमी होती है और इसके बजाय वे कुछ श्रम सुरक्षा के साथ कम वेतन वाली नौकरियों पर कब्जा कर लेती हैं। शोध के निष्कर्ष समाज में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और बेहतर आर्थिक परिणामों के बीच संबंध दर्शाते हैं। इसके अलावा, महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसाय आर्थिक विविधता और उत्पादकता बढ़ाते हैं। इसलिए, आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए व्यापार विस्तार में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है।

- महिलाओं के कार्य का पुनर्गठन; ग्रेटर लैट्रोब वैली, ऑस्ट्रेलिया में श्रम बाजार और घरेलू लिंग व्यवस्थाएँ

पेपर ग्रेटर लैट्रोब वैली, ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्र और घरेलू और श्रम बाजार में लिंग संबंधों पर श्रम बाजार में आर्थिक पुनर्गठन के प्रभाव का विश्लेषण करता है। क्षेत्र से मात्रात्मक डेटा का उपयोग 1996 से 2011 तक श्रम बाजार संरचना का विश्लेषण करने



के लिए किया जाता है, जबकि श्रम बाजार परिवर्तनों के संबंध में लिंग संबंधों का आकलन करने के लिए क्षेत्र के 25 घरों से गुणात्मक साक्षात्कार जानकारी एकत्र की गई थी। कुल मिलाकर, निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि श्रम बाजार का नेतृत्व 'पुरुष कमाने वाले' द्वारा किया जाता रहा है और व्यावसायिक और औद्योगिक नौकरियां लैंगिक रूप से विभाजित हैं। इसलिए, बदलते श्रम बाजार के साथ भी, घरों में लिंग संरचनाएं श्रम बाजार के लिंग विभाजन को प्रभावित करना जारी रखती हैं। श्रम बाजार और घर में लिंग संबंधों के बीच पारस्परिक संबंध है।

- महिलाएँ, कार्य और अर्थव्यवस्था

यह पेपर अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और उसके कार्य पत्रों द्वारा एकत्र किए गए अनुसंधान और डेटा को प्रस्तुत करने के माध्यम से लिंग परिप्रेक्ष्य से श्रम बाजार और इसकी विशेषताओं पर चर्चा करता है। आईएमएफ श्रम बाजार में विकास और स्थिरता के निर्माण के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में लैंगिक समानता के साथ अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का मामला बनाता है। यह पेपर लिंग-विशिष्ट बाजार विशेषताओं, बढ़ती महिला श्रम बल भागीदारी के साथ चुनौतियों, लैंगिक समानता के व्यापक आर्थिक लाभ और उच्च महिला श्रम बल भागीदारी का समर्थन करने वाली नीतियों की सिफारिशों पर प्रकाश डालता है। आईएमएफ आर्थिक लैंगिक समानता के लिए किए जाने वाले आवश्यक कार्यों को दर्शाता है और मानता है कि महिलाओं को वेतन अंतर, श्रम भेदभाव और कम नेतृत्व प्रतिनिधित्व का अनुभव करना जारी है। हालाँकि यह पेपर इन मुद्दों के लिए विशिष्ट नीतियों का प्रस्ताव नहीं करता है, लेकिन यह महिला श्रम भागीदारी को बढ़ाने से अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले आर्थिक प्रभाव के साक्ष्य प्रस्तुत करता है और ऐसी नीति की सिफारिश करता है जिसमें लिंग परिप्रेक्ष्य शामिल हो।

- अपना पूरा दिमाग काम पर लगाना: लैंगिक लाभांश का उपयोग करना

आईसीडी की व्यापार और उद्योग सलाहकार समिति द्वारा तैयार की गई यह रिपोर्ट व्यापार में लैंगिक विविधता के लाभों पर प्रकाश डालती है, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए सरकारों और व्यवसायों द्वारा उपयोग की जाने वाली नीतियों का विश्लेषण करती है, और व्यापार में महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं को शामिल करती है। यह पेपर लिंग विविधता प्रथाओं को सुविधाजनक बनाने के लिए व्यवसायों के लिए सार्वजनिक नीति सिफारिशें भी देता है। विशेष रूप से, यह पेपर संगठनों के लिए एक संसाधन है क्योंकि वे अपने विविधता कथन और रणनीति का निर्माण करते हैं, लिंग विविधता कथन और प्रथाओं के कई मामले प्रदान करते हैं।

- हमारे सभी विचारों को कार्य में लगाना: महिलाएँ और उद्यमिता

"पुटिंग ऑल अवर माइंड्स टू वर्क: हार्नेसिंग द जेंडर डिविडेंड" पेपर तैयार करने और लिंग विविधता को बढ़ावा देने के लिए उनके काम पर 215 कंपनियों का मूल्यांकन करने के बाद, डेलॉइट के साथ व्यापार और उद्योग सलाहकार समिति इसमें लिंग अंतर और उद्यमिता पर ध्यान केंद्रित करती है। प्रतिवेदन। यह फ्रांस, जापान, न्यूजीलैंड और अमेरिका की सरकारों के वरिष्ठ प्रतिनिधियों और व्यवसायों के अधिकारियों के साथ एक कार्यशाला के साक्ष्य के आधार पर महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में शामिल सभी पक्षों के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं की पेशकश करता है। उद्यमिता में महिलाओं के लिए अद्वितीय कुछ मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है, विशेष रूप से वित्त तक पहुंच, वित्तीय साक्षरता, प्रबंधन प्रशिक्षण और आत्मविश्वास। यह पेपर उद्यमिता में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए विशिष्ट नीतिगत हस्तक्षेप का आह्वान करता है। वित्त तक पहुंच के संदर्भ में, पेपर विश्लेषण करता है कि कैसे निजी इक्विटी संस्थान अक्सर महिला उद्यमियों को ध्यान में रखकर संचालित नहीं होते हैं, इसलिए, महिलाओं के लिए फंडिंग आकर्षित करने के लिए आवश्यक विश्वास के दायरे में प्रवेश करना कठिन होता है। अंत में, रिपोर्ट उन व्यवसायों के मामले का अध्ययन प्रस्तुत करती है जिन्होंने महिला उद्यमियों का समर्थन करने वाले कार्यक्रम लागू किए हैं, सार्वजनिक नीतियों की सिफारिश की है जो उद्यमिता में महिलाओं की भागीदारी को सुविधाजनक बनाती हैं।

- "एक पति के रूप में मैं प्यार करूंगी, नेतृत्व करूंगी और प्रदान करूंगी।" घाना में भूमि तक लिंग आधारित पहुंच

यह अध्ययन भूमि स्वामित्व तक पहुंच में लैंगिक असमानता का मूल्यांकन करता है, जिसमें निर्धारक भी शामिल हैं, जिन्हें अच्छी तरह से समझा नहीं गया है। सरकारें अक्सर और समानता की दिशा में एक कदम के रूप में महिलाओं की भूमि तक पहुंच को प्राथमिकता देती हैं, लेकिन यह पेपर बताता है कि कानूनों के अलावा अन्य कारक महिलाओं की भूमि तक पहुंच में कैसे भूमिका निभाते हैं। गुणात्मक फ्रील्डवर्क के आधार पर, यह पेपर उन सामाजिक मानदंडों पर प्रकाश डालता है जो

महिलाओं की भूमि तक पहुंच को प्रभावित करते हैं, चर्चा को चार स्तरों पर विभाजित करते हैं जिनमें शामिल हैं: घर, समुदाय, राज्य और बाज़ार। यह पेपर इस मॉडल को लागू करने के लिए उदाहरण के रूप में घाना का उपयोग करता है, और दिखाता है कि कैसे सामाजिक और पारिवारिक आयाम महिलाओं की भूमि तक पहुंच को सीमित करते हैं। भूमि की समान विरासत और तलाक के बाद भूमि के वितरण के लिए नीतियों को अनुकूलित करने की सिफारिशों पर प्रकाश डाला गया है, लेकिन समानता के लिए सामाजिक सम्मेलनों की भूमिका को एक सीमित कारक के रूप में मान्यता दी गई है।

- स्कूल के बाद की देखभाल और माता-पिता की श्रम आपूर्ति

यह अध्ययन इस सवाल पर केंद्रित है कि क्या स्कूल के बाद की देखभाल मातृ रोजगार को बढ़ावा देती है, और इसलिए श्रम आपूर्ति में लैंगिक समानता को बढ़ावा देती है। इस प्रश्न को संबोधित करने के लिए, पेपर स्विट्जरलैंड में श्रम आपूर्ति में भिन्नता का विश्लेषण करने के लिए मात्रात्मक तरीकों का उपयोग करता है जहां कुछ क्षेत्रों में स्कूल के बाद देखभाल प्रदान की जाती है। निष्कर्ष बताते हैं कि स्कूल के बाद देखभाल प्रावधान का कुल मिलाकर माता-पिता के रोजगार पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है, लेकिन माताओं के पूर्णकालिक रोजगार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए, बच्चों की देखभाल अर्थव्यवस्था में लैंगिक समानता बढ़ाने में भूमिका निभा सकती है।

- महिला नेतृत्व और लैंगिक समानता: संयंत्र बंद होने से साक्ष्य

यह अध्ययन एक संयंत्र बंद होने के अध्ययन से लैंगिक समानता पर महिला नेतृत्व के प्रभाव की जांच करता है। प्लांट बंद होने से विस्थापित श्रमिकों द्वारा अनुभव किए गए वेतन परिवर्तनों में अंतर को मापने के लिए श्रमिक-संयंत्र मिलान पैनल डेटा का उपयोग करते हुए, यह देखा गया है कि एक ही समापन संयंत्र से एक ही नई फर्म में जाने वाले श्रमिकों पर विचार करते समय पुरुषों की तुलना में महिलाओं में अधिक वेतन हानि होती है। हालांकि इस अध्ययन में महिला नेतृत्व वाली कंपनियों को काम पर रखने से वेतन में काफी कम अंतर पाया गया है। नतीजे बताते हैं कि नेतृत्व की स्थिति में महिलाएं अपनी फर्मों के अंदर अधिक महिला-अनुकूल संस्कृतियों को प्रोत्साहित करती हैं।

- ग्रामीण विकास के लिए महिला सशक्तिकरण

यह पेपर ग्रामीण विकास में महिला सशक्तिकरण की भूमिका पर शोध की समीक्षा करता है। सामुदायिक विकास जो ग्रामीण महिलाओं की विविध आवश्यकताओं के लिए सामाजिक, तकनीकी, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण पर केंद्रित है, इन समुदायों को विशिष्ट रूप से लाभान्वित कर सकता है। इसलिए, इन निष्कर्षों का महिला सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करने वाले सामुदायिक विकास कार्यक्रमों के कार्यान्वयन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है।

### निष्कर्ष

लैंगिक समानता और शासन कार्यक्रम समावेशी समाज को बढ़ावा देना चाहता है ताकि सभी लोग और विशेष रूप से महिलाएं और लड़कियां अपनी जीवन आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम हो सकें। उप-सहारा अफ्रीका, मैक्सिको और अमेरिका पर ध्यान केंद्रित करते हुए, हम महिलाओं के प्रजनन और आर्थिक विकल्पों का विस्तार करने के लिए अनुदान देते हैं; जिन लोगों की वे सेवा करते हैं उनके प्रति सरकारों की प्रतिक्रिया बढ़ाएँ; और साक्ष्य के प्रभावी उपयोग के माध्यम से नीति निर्धारण में सुधार करना।[[19,20]

### संदर्भ

1. डेमिरगोज़ बाल, मेल्टेम।"TOPLUMSAL CİNSİYET EŞİTSİZLİĞİNE GENEL BAKIŞ"।
2. ^ वुड, जूलिया। लिंग आधारित जीवन. छठा. बेलमोंट, सीए: वड्सवर्थ/थॉमसन लर्निंग, 2005।
3. ^ मौघन आरजे, वॉटसन जेएस, वियर जे (1983)।"मानव कंकाल की मांसपेशी की ताकत और क्रॉस-अनुभागीय क्षेत्र"।फिजियोलॉजी जर्नल।338(1): 37-49.doi:10.1113/jphysiol.1983.sp014658।पीएमसी 1197179।पीएमआईडी6875963.
4. ^ फ्रोंटेरा, डब्ल्यूआर; ह्यूजेस, वीए; लुत्ज़, केजे; इवांस, डब्ल्यूजे (1991)। "45 से 78 वर्ष के पुरुषों और महिलाओं में मांसपेशियों की ताकत और द्रव्यमान का एक क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन"।जे एपल फिजियोल.71(2): 644-50।डीओआई:10.1152/जैपीएल.1991.71.2.644।पीएमआईडी1938738.

5. ^ समरस, थॉमस (2007)। मानव शरीर का आकार और स्केलिंग के नियम। न्यूयॉर्क: नोवा साइंस। पृ. 33-61. आईएसबीएन 978-1-60021-408-0.
6. ^ "जन्म के समय जीवन प्रत्याशा, देश की विश्व से तुलना"। सीआईए वर्ल्ड फैक्टबुक। यूएस सेंट्रल इंटेलिजेंस एजेंसी। 13 जून 2007 को मूल से संग्रहीत। 12 जनवरी 2011 को पुनःप्राप्त।
7. ^ अल्फ्रेड ग्लक्समैन (1981)। मानव और स्तनधारी जीव विज्ञान और विकृति विज्ञान में यौन द्विरूपता। अकादमिक प्रेस. पीपी. 66-75. आईएसबीएन 978-0-12-286960-0. ओसीएलसी 7831448।
8. ^ पुट्स, डेविड ए. (2010)। "सौंदर्य और जानवर: मनुष्यों में यौन चयन के तंत्र"। विकास और मानव व्यवहार. 31(3): 157-175. doi:10.1016/j.evolhumbehav.2010.02.005।
9. ^ सिमर्ली, रिचर्ड बी. (1 फरवरी 2005)। "हार्मोन पर आधारित: हाइपोथैलेमिक विकास का अंतःस्रावी विनियमन"। न्यूरोबायोलॉजी में वर्तमान राय। 15 (1): 81-85. doi : 10.1016/j.conb.2005.01.013। आईएसएसएन 0959-4388. पीएमआईडी 15721748। एस2सीआईडी 24944473।
10. ^ रेनिश, जून माचोवर; जिम्बा-डेविस, मैरी; सैंडर्स, स्टेफनी ए. (1 जनवरी 1991)। "मनुष्यों में यौन द्विरूपी व्यवहार विकास में हार्मोनल योगदान"। साइकोन्यूरोएंडोक्रिनोलॉजी। 16 (1-3): 213-278. डीओआई : 10.1016/0306-4530(91)90080-डी। पीएमआईडी 1961841. एस2सीआईडी 44814972।
11. ^ कोलोम, रॉबर्टो; जुआन-एस्पिनोसा, मैनुअल; अबाद, फ्रांसिस्को; गार्सिया, लुइस एफ (फरवरी 2000)। "सामान्य बुद्धि में नगण्य लिंग अंतर"। बुद्धिमत्ता। 28 (1): 57-68. डीओआई : 10.1016/एस0160-2896(99)00035-5।
12. ^ बायर्न्स, जेम्स पी.; मिलर, डेविड सी.; शेफर, विलियम डी. (1999)। "जोखिम लेने में लिंग अंतर: एक मेटा-विश्लेषण"। मनोवैज्ञानिक बुलेटिन. 125 (3): 367-383. डीओआई : 10.1037/0033-2909.125.3.367।
13. ^ कार्लसन, एन. 'हार्मोनल कंट्रोल ऑफ एग्रेसिव बिहेवियर' अध्याय 11 [फिजियोलॉजी ऑफ बिहेवियर], 2013, पियर्सन एजुकेशन इंक।
14. ^ कार्ड, नोएल ए.; स्टकी, ब्रायन डी.; सवालानी, गीता एम.; लिटिल, टॉड डी. (1 अक्टूबर 2008)। "बचपन और किशोरावस्था के दौरान प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आक्रामकता: लिंग अंतर, अंतर्संबंध और कुसमायोजन के संबंधों की एक मेटा-विश्लेषणात्मक समीक्षा"। बाल विकास। 79 (5): 1185-1229। doi : 10.1111/j.1467-8624.2008.01184.x। आईएसएसएन 1467-8624. पीएमआईडी 18826521. एस2सीआईडी 7942628।
15. ^ क्रिस्टोव-मूर, लियोनार्डो; सिम्पसन, एलिजाबेथ ए.; कौडे, गीनो; ग्रिगाइटे, क्रिस्टीना; इकोबोनी, मार्को; फेरारी, पियर फ्रांसेस्को (1 अक्टूबर 2014)। "सहानुभूति: मस्तिष्क और व्यवहार में लिंग प्रभाव"। तंत्रिका विज्ञान और जैवव्यवहार समीक्षाएँ। 46 (4): 604-627. doi : 10.1016/j.neubiorev.2014.09.001। आईएसएसएन 1873-7528। पीएमसी 5110041. पीएमआईडी 25236781।
16. ^ सेलेक, पीटर; ओस्टैटनिकोवा, डेनिएला; होडोसी, जूलियस (17 फरवरी 2015)। "मस्तिष्क के व्यवहार संबंधी कार्यों पर टेस्टोस्टेरोन के प्रभाव पर"। तंत्रिका विज्ञान में फ्रंटियर्स। 9 : 12. doi : 10.3389/fnins.2015.00012। आईएसएसएन 1662-4548. पीएमसी 4330791. पीएमआईडी 25741229।
17. ^ एलियट, लिसे। गुलाबी मस्तिष्क, नीला मस्तिष्क।
18. ^ कॉर्डियर, बी (2012)। "लिंग, जीव विज्ञान और समाज के बीच"। सेक्सोलॉजी और यौन स्वास्थ्य के यूरोपीय जर्नल।
19. ^ ब्रेस्कॉल, वी (2013)। "लिंग भेद के लिए आवश्यक स्पष्टीकरणों के समर्थन पर सिस्टम-न्यायसंगत उद्देश्यों का प्रभाव"। व्यक्तित्व और सामाजिक मनोविज्ञान का अखबार। 105 (6): 891-908। डीओआई : 10.1037/ए0034701। पीएमआईडी 24295379। एस2सीआईडी 3333149।
20. ^ हाइड, जे (2005)। "लिंग समानता परिकल्पना"। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक. 60 (6): 581-592. डीओआई : 10.1037/0003-066X.60.6.581। पीएमआईडी 16173891।



**INNO SPACE**  
SJIF Scientific Journal Impact Factor  
**Impact Factor: 8.118**



**ISSN** INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA



# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 **9940 572 462**  **6381 907 438**  **ijirset@gmail.com**



[www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Scan to save the contact details